A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

विदूषी मालिनी राजूरकर की संगीत साधना तथा ख्याल, टप्पा, ठुमरी और तराना गायन शैलियों में उनकी निपुणता

Vikas Kumar
Research Scholar, Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 18 May, 2026

Kumar, V. (2026). Vidushi Malini Rajurkar Ki Sangeet Sadhna Tatha Khyal, Tappa, Thumri Aur Tarana Gayan Shailiyon Mein Unki Nipunta. Swar Sindhu, 14(1), 210-213.

सार

भारतीय शास्त्रीय संगीत में विदुषी मालिनी राजूरकर जी एक आदरणीय एवं उच्च कोटि का नाम विख्यात है। उनके ख्याल टप्पा ठुमरी और तराना इन चारों गायन शैलियों में गहन ज्ञान और निपुणता ने उन्हें इस क्षेत्र में इस विशिष्ट स्थान दिलाया है। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि एक कलाकार इन चारों गायन विधाओं में कैसे निपुण हो सकता है, जिसमें तकनीकी ज्ञान साधना और संगीतिक ज्ञान का समावेश है। इन चारों विधाओं में उनकी महारत का विश्लेषण करते हुए हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि कैसे उनके गायन में तकनीकी जटिलताओं के बावजूद एक सहजता बनी रहती है इस अध्ययन के माध्यम से हम विदुषी मालिनी जी के गायन के विभिन्न पहलुओं, उनके गुरु की भूमिका, उनके संगीत साधना और उनके गायन की विशेषता का भी विश्लेषण करेंगे जो वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है।

कुंजी शब्द: विदूषी मालिनी राजुरकर, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, खयाल गायन, टप्पा गायन, ठुमरी गायन, तराना गायन, ग्वालियर घराना, राग संगीत, संगीत शिक्षा, भारतीय शास्त्रीय संगीत।

परिचय

भारतीय शास्त्रीय संगीत की विविधता और गहराई इसे विश्व संगीत के मानचित्र पर एक विशेष स्थान प्रदान करती है, इस अद्भुत संगीत परंपरा में विभिन्न गायन शैलियों का योगदान है, जिसमें ख्याल ठुमरी टप्पा और तराना की विशेषताएं अद्वितीय है। इन विधाओं के माध्यम से शास्त्रीय संगीत के परंपरा को आगे बढ़ते हुए कई कलाकारों ने अपनी अनूठी छाप छोड़ी है। विदुषी मालिनी राजूरकर जी उन कलाकारों में से एक है, जिन्होंने अपनी साधना और समर्पण से भारतीय संगीत को समृद्ध किया है। उनके गायन शैली में लय भाव और राग की सूक्ष्मता का विशेष संयोजन संगीत प्रेमियों और विद्वानों के बीच विशेष आदर का पात्र है। इस शोध में हम विशेष रूप से ख्याल ठुमरी टप्पा और तराना चारों गायन शैलियों में उनकी निपुणता का विश्लेषण करेंगे जो उनकी संगीत यात्रा में एक विशेष स्थान रखती है।

ख्याल

विदुषी मालिनी राजूरकर जी भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक प्रमुख और प्रतिष्ठित कलाकार ने ख्याल गायकी में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका संगीत के प्रति झुकाव बचपन से ही दिखाई दिया, परिवार से भी उन्हें भरपूर प्रेरणा प्राप्त हुई और धीरे-धीरे अपनी कला को विकसित किया कॉलेज के दिनों में भी उन्होंने ख्याल गायकी को गहराई से सीखा जिससे उनका संगीत में उत्कृष्ट प्राप्त करना संभव हुआ विदुषी मालिनी राजूरकर जी की गायकी की विशेषता यह थी कि उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत की ख्याल गायन की पारंपरिक बंदीशो को बहुत ही सुंदर वह कुशलता से प्रस्तुत किया चाहे वह राग भीमपलासी में "जा जा रे अपने मंदिर हो" , "केदार में कहना रे नंद नंदन" , मरवा में "काहू की रीत को", दुर्गा में कहूं का से मन की विथा " हो इसी तरह अनेक रागों में मालिनी जी ने पारंपरिक बंदिशें को प्रस्तुत किया और उनके साथ न्याय किया उनके गायन का एक अनोखा तरीका था जिसमें वे स्वर् की गहराई और कोमलता को संतुलित करती थी। उनका मानना था, कि प्रारंभ में स्वर चाहे कितने भी कठोर हो उन्हें अपनी जगह पर सटीकता से स्थिर होना चाहिए, जिससे वह एक स्थिरता को प्राप्त कर सके, बाद में उनमें कोमलता और भाव को प्रधानता दी जा सकती है। इस दृष्टिकोण ने उन्हें ख्याल गायकी में एक विशेष पहचान दी और उन्होंने अपनी साधना और प्रतिभा से इसे और भी ऊंचाई तक पहुंचाया।

खयाल गायकी में विदुषी राजूरकर जी ने जो योगदान दिया वह प्रशंसनीय है। उनकी गायकी ने अनेक श्रोताओं को मोहित किया और उन्होंने कई प्रतिष्ठित मंचों पर अपने अद्भुत गायन का प्रदर्शन किया। उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें संगीत नाटक एकेडमि पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। मालिनी राजूरकर जी के काम ने ख्याल गायकी को न केवल समृद्ध किया बल्कि अपनी अनूठी शैली, गहरे रियाज, और अद्वितीय प्रस्तुति के माध्यम से ख्याल गायकी की परंपरा को और अधिक सशक्त बनाया।

टप्पा

विदुषी मालिनी राजूरकर जी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत में टप्पा गायकी में भी एक विशेष पहचान बनाई। टप्पा एक विशेष गायन शैली है, जो अपनी तेजी और चंचलता के लिए जानी जाती है। यह मुख्य रूप से प्रेम और सौंदर्य के भावों को व्यक्त करने के लिए गई जाती है और ख्याल से भिन्न होती है। टप्पा गायन में प्रवीणता के लिए एक विशेष रियाज की आवश्यकता होती है, जो केवल संगीत के तकनीकी पहलुओं को ही नहीं बल्कि गले की तैयारी के लिए भी महत्वपूर्ण है। विदुषी मालिनी जी ने अपने गुरु से टप्पा गायकी की विशेष शिक्षा प्राप्त की उनका मानना था, कि टप्पा के लिए अलग से तालीम और रियाज जरूरी है, ताकि कलाकार टप्पा की तेज चाल और जटिलताओं को समझ सके उनके गुरु उन्हें इस गायकी के लिए अलग से तैयार करते थे। अलग तरीके बताते थे, जिससे वह टप्पा को कुशलता से निभा सके, उनका यह अनुभव यह दर्शाता है, कि टप्पा गायकी किसी साधारण रियाज से नहीं बल्कि गहराई से समझने और विशिष्ट तकनीक पर काम करने से आती है। विदुषी मालिनी राजूरकर जी ने टप्पा गायकी में अपनी विशेष शैली के कारण इसे नया जीवन दिया। उनके गायन ने टप्पा की लोकप्रियता को फिर से बढ़ावा दिया और उनके स्वर में यह विशेषता थी, कि वह टप्पा की नाजुक्ताओं और उसके चंचल स्वरूप को बहुत खूबसूरती से प्रस्तुत करती थी। उनके द्वारा प्रस्तुत टप्पा गायकी ने श्रोताओं को खूब मोहित किया है, चाहे वह राग भैरवी में "लाल वाला जोबन" , काफी में "बोल सुना जानी सैया रे", या समाज में " चाल पहचानी हो", इस गायन शैली के प्रति उनकी गहरी समझ और उनके द्वारा किया गया अद्वितीय प्रदर्शन उन्हें इस क्षेत्र में एक विशेष स्थान दिलाने में सहायक रहा। इसी कारण उन्हें "क्वीन ऑफ टप्पा" भी कहा जाने लगा उनके कारण यह गायन शैली एक बार फिर से संगीत प्रेमियों के बीच चर्चा का विषय बन गई।

ठुमरी

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विभिन्न गायन शैलियों में ठुमरी भी एक ऐसी शैली है, जो शास्त्रीय बंधन और भाव प्रकट करने के अनोखे समन्वय का प्रतीक है। जहां ख्याल गायन अपने विचार आत्मक विस्तार और गहराई के लिए प्रसिद्ध है और टप्पा अपनी चंचलता और लहकारी के लिए प्रसिद्ध है, वही ठुमरी अपनी भावनात्मक अभिव्यक्ति और काव्यात्मक सौंदर्य के लिए जानी जाती है विदुषी मालिनी राजूरकर ने ठुमरी गायकी में भी अपनी विशिष्ट शैली और अनोखी प्रस्तुतियों के माध्यम से जन-जन के चित् को मोहित किया ठुमरी जो मुख्यत श्रृंगार और करुण रस से भरपूर होती है, उसमें उन्होंने अपने कोमल स्वर और भावनात्मक गहराई से विशेष योगदान दिया। उनके गायन में ठहराव मिठास और रियाज की परंपरागत मर्यादा का विशेष संतुलन था। उनके द्वारा प्रस्तुत ठुमरिया जैसे राग समाज में "आज मोरी कलाई मूर्ख गई", राग भैरवी में "अब नाम मारो फूल गेंदवा", न केवल राग और लह की दृष्टि से उत्कृष्ट थी, बल्कि उनसे जुड़ी भावनाओं को भी श्रोताओं तक प्रभावी ढंग से पहुंचती थी। मालिनी जी की अपनी ठुमरी गायकी में शब्दों के अर्थ और उनके पीछे छिपे भावों को जीवंत करने पर विशेष ध्यान देती थी। जिसे उनके गायन में एक संवेदनशीलता झलकती थी। उनकी इस गायन शैली ने ठहराव कोमलता और अभिव्यक्ति के अद्वितीय संयोजन के कारण संगीत जगत में उच्च स्थान प्राप्त किया यह गहराई और भाव पूर्णता ही है, जो उनकी ठुमरी गायकी को विशेष बनती है और आज भी श्रोताओं के मन में उनकी प्रस्तुतियों अमित छाप छोड़ता है।

तराना

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तराना एक ऐसी गायन शैली है, जो लय और स्वर की ऊर्जावान अभिव्यक्ति का प्रतीक है। इसमें तान बोल और धुन का सामंजस्य पूर्ण संयोजन देखने को मिलता है। तराना अपनी तीव्र गतिशीलता और ऊर्जा से श्रोताओं को मंत्र मुक्त करता है। विदुषी मालिनी राजूरकर का तराना गायकी के लिए भी विशेष प्रदर्शन रहा है। उनके प्रसिद्ध तराना में राग यमन राग भीमपलासी और राग भैरवी में गए गए तराने उल्लेखनीय है। उनकी प्रस्तुति में तराने के स्वर को ताल का तालमेल बहुत कुशलता से होता था। मालिनी जी तराना में केवल गति और लह पर ही ध्यान केंद्रित नहीं करती थी। बल्कि हर शब्द और स्वर के पीछे छिपे सौंदर्य को भी ऊभारती थी। उनके द्वारा गाए गए तराने श्रोता को राग की संरचना, स्वरों की गति और लहकारी का अद्भुत अनुभव करते थे। तराना जो बोलते हैं, अभ्यास और रचनात्मक का संगम है। उसमें विदुषी मालिनी राजूरकर जी ने अपनी साधना और संगीत की गहरी समझ से इसे एक नई ऊंचाई प्रदान की।

निष्कर्ष

विदूषी मालीनी राजुरकर जी की खयाल, ठुमरी, टप्पा और तराना गायन विधाओं में निपुणता उनकी साधना, लगन और संगीत के प्रति समर्पण का प्रमाण है। उन्होंने इन सभी गायन शैलियों में अपनी अनोखी छवि स्थापित की और शास्त्रीय संगीत को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। खयाल में भाव और लय का संतुलन, टप्पा में तीव्र लयकारी, ठुमरी में मधुर भाव और तराना में अद्वितीय लय का संयोजन उनकी कला की गहराई को दर्शाता है। उनकी साधना यह सिद्ध करती है, कि निरंतर अभ्यास और सच्ची लगन से कोई भी कलाकार इन शैलियों में महारत हासिल कर सकता है। उनका जीवन और कला भावी संगीत विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो यह सिखाती है, कि संगीत के प्रति निष्ठा और समर्पण से उच्चतम शिखर तक पहुँचना संभव है।

संदर्भ सूची

पुस्तकें:

नाडकर्णी, मोहन (1982). मध्यवर्ती : मध्यप्रदेश के पन्द्रह संगीतकार (अनुवाद: सुशील त्रिवेदी). उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ संगीत अकादमी, भोपाल: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.

कुंटे केशवचैतन्य ज. (2024). छंदोवाती : श्री मति मालिनी वसंत राजूरकर के साठवे जन्मदिन का स्मृति चिन्ह. पुणे: अहत प्रकाशन.

ऑनलाइन लेख:

Times of India (2023). Malini Rajurkar, Hindustani vocalist whose Tappa renditions were epic, passes away at 82. प्राप्त: https://m.timesofindia.com/city/pune/malini-rajurkar-hindustani-vocalist-whose-tappa-renditions-were-epic-passes-away-at-82/articleshow/103447252.cms

वीडियो साक्षात्कार:

Malini Rajurkar Ji: A Tribute. YouTube वीडियो. प्राप्त: https://youtu.be/AySAmDgensU

व्यक्तिगत साक्षात्कार:

विदूषी सुभद्रा देसाई (हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका) से व्यक्तिगत साक्षात्कार, अगस्त 2024, नई दिल्ली।

डॉ. पुष्कर लेले (हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक) से व्यक्तिगत साक्षात्कार, अक्टूबर 2024, , पुणे।